Toppersnotes
Unleash the topper in you

उत्तर प्रदेश पुलिस
कांस्टेबल

UTTAR PRADESH POLICE RECRUITMENT & PROMOTION BOARD

भाग – 1

हिंदी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1.	भाषा	1
2.	तत्सम – तद्भव	5
3.	पर्यायवाची	7
4.	विलोम – शब्द	18
5.	शब्द – युग्म	24
6.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	33
7.	वर्तनी शुद्धि	38
8.	संज्ञा	40
9.	सर्वनाम	42
10.	विशेषण	44
11.	क्रिया	47
12.	काल	49
13.	लिंग	51
14.	वचन	51
15.	वाच्य	53
16.	कारक	56
17.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	66
18.	संधि	69
19.	समास	76
20.	उपसर्ग	81
21.	प्रत्यय	85
22.	अव्यय	88
23.	वाक्य रचना	90
24.	वाक्य – शुद्धि	94
25.	शुद्ध वाक्य	97
26.	मुहावरे	104
27.	लोकोक्ति	115
28.	रस	129
29.	छन्द	131
30.	अलंकार	139
31.	हिन्दी भाषा में पुरस्कार	152
32.	अपठित गद्यांश	156

भाषा

"भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत पर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है ।

बोली

"बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है; किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती ।"

भाषा का क्षेत्र व्यापक हुआ करता है । इसे सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व्यापारिक आदि मान्यताएँ प्राप्त होती हैं; जबकि बोली को मात्र सामाजिक मान्यता ही मिल पाती है । भाषा का अपना गठित व्याकरण हुआ करता है; परन्तु बोली का कोई व्याकरण नहीं होता । हाँ, बोली ही भाषा को नये-नये बिम्ब, प्रतीकात्मक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि समर्पित करती है । जब कोई बोली विकास करते-करते उक्त सभी मान्यताएँ प्राप्त कर लेती है, तब वह बोली न रहकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे-खडी बोली हिन्दी जो पहले (द्विवेदी-युग से पूर्व) मात्र प्रांतीय भाषा या बोली मात्र थी वह आज भाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है ।

एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आस-पास की बोलियों पर उसका भारी प्रभाव पडता है । आज की खडी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि सभी को प्रभावित किया है । हाँ, यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी मानक भाषा कुछ बोलियों को बिल्कुल समाप्त भी कर देती है । एक बात और है, मानक भाषा पर स्थानीय बोलियों का प्रभाव ही देखा जाता है ।

एक उदाहरण द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है- बिहार राज्य के बेगूसराय खगडिया, समस्तीपुर आदि जिलों में प्रायः ऐसा बोला जाता है-

हम कैह देंगे । हम नैं करेंगे आदि ।

भोजपुर क्षेत्र में : हमें लौक रहा है (दिखाई पड रहा है) । हम काम किये (हमने काम किया)

पंजाब प्रान्त का असर : हमने जाना है (हमको जाना है)।

दिल्ली-आगरा क्षेत्र मे : वह कह्वे था/मैं जाऊँ । मेरे को जाना है ।

कानपुर आदि क्षेत्रों में : वह गया हैगा ।

एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं, जबकि एक बोली में कई भाषाएँ नहीं होतीं ।

बोली बोलनेवाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली में बातें करते हैं; किन्तु बाहरी लोगों से भाषा का ही प्रयोग करते है ।

ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियों हैं-

(क) भारोपीय परिवार : उत्तरी भारत में बोली जानेवाली भाषाएँ ।

(ख) द्रविड परिवार : तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम ।

(ग) आस्ट्रिक परिवार : संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खडिया, कोर्क, भूमिज, गदवा, पलौंक, वा, खासी, मोनख्मे, निकोबारी ।

(घ) तिब्बती चीनी : लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर-मिरी, अक ।

(ड) अवर्गीकृत : बुरूशास्की, अंडमानी भर

(च) करेन तथा मन : बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र है)

हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है । हिन्दी की उत्पत्ति प्राकृत से । प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है । स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यों की भाषा पुरानी संस्कृत थी । उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते है । उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुई । हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई । प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं की । हमारी वर्तमान हिन्दी, अर्द्धमागधी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है ।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं है; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते है । एक बहुत बडे क्षेत्र-जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है-की अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी;

किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था ।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बडा ही व्यापक हो चला है । इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है–

(क) बिहारी भाषा : बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है । यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उडिया और असामी की बहन लगती है । इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं– मैथिली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि । मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बडे प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए ।

(ख) पूर्वी हिन्दी : अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली है । गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस–जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की । दूसरी तीन बोलियाँ हैं– अवधी, बघेली और छत्तीसगढी । मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी हैं ।

(ग) पश्चिमी हिन्दी : पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी है; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है ।

यह राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी से संबंध रखती है । इस भाषा के कई भेद हैं––हिन्दुस्तानी, ब्रज, कन्नौजी, बुँदेली, बाँगरू और दक्षिणी ।

गंगा–यमुना के बीच मध्यवर्ती प्रान्त में और उसके दक्षिण दिल्ली से इटावे तक ब्रजभाषा बोली जाती है । गुडगाँव और भरतपुर, करौली और ग्वालियर तक ब्रजभाषी हैं । इस भाषा के कवियों में सूरदास और बिहारीलाल ज्यादा चर्चित हुए ।

कन्नौजी, ब्रजभाषा से बहुत कुछ मिलती–जुलती है । इटावा से इलाहाबाद तक इसके बोलनेवाले हैं । अवध के हरदोई और उन्नाव में यही भाषा बोली जाती है ।

बुँदेली बुंदेलखंड की बोली है । झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर के पूर्वी प्रान्त, मध्यप्रदेश के दमोह छत्तीसगढ के रायपुर, सिउनी, नरसिंहपुर आदि स्थानों की बोली बुँदेली है । छिंदवाडा और हुशंगाबाद के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रचार है ।

हिसार, झींद, रोहतक, करनाल आदि जिलों में बाँगरू भाषा बोली जाती है। दिल्ली के आसपास की भी यही भाषा है ।

दक्षिणी हिन्दी बोलनेवाले मुंबई, बरोदा,बरार, मध्य प्रदेश, कोचीन, कुग, हैदराबाद, चेन्नई, माइसोर और ट्रावनकोर तक फैले है । इन क्षेत्रों के लोग मुझे या मुझको की जगह 'मेरे को' बोलते है ।

भारत की भाषाओं की सूची		
क्र. सं.	भाषाएँ	बोलनेवालों का अनुपात % में
1	संस्कृत	0.01
2	मैथिली	0.9
3	मराठी	7.5
4	नेपाली	0.3
5	पंजाबी	2.8
6	संथाली	0.6
7	मलयालम	3.6
8	मणिपुरी	0.2
9	असमिया	1.6
10	ओडिया	3.4
11	गुजराती	4.9
12	कश्मीरी	0.5
13	कन्नड	3.9
14	डोगरी	0.2
15	कोंकणी	0.2
16	बांग्ला	8.3
17	तमिल	6.3
18	सिंधी	0.3
19	उर्दू	5.2
20	बोडो	0.1
21	तेलुगू	7.9
22	हिन्दी	40.2

देवनागरी लिपि

'हिन्दी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी लिपी का विकास 'ब्राह्मी लिपी' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है । 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों बडौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था । महाराष्ट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया ।

देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का बडा महत्वपूर्ण प्रभाव पडा ।

(i) फारसी प्रभाव : पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिह्न नहीं थे, जो बाद में फारसी से प्रभावित होकर विकसित हुए- क, ख, ग, ज, फ ।

(ii) बांग्ला-प्रभाव : गोल-गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई ।

(iii) रोमन-प्रभाव : इससे प्रभावित हो विभिन्न विराम-चिह्नों, जैसे--अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नसूचक चिह्न, विस्मयसूचक चिह्न, उद्धरण चिह्न एवं पूर्ण विराम में 'खडी पाई' की जगह 'बिन्दु' (च्यपदज) का प्रयोग होने लगा ।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :

- इसके ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक है ।
- प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण है।
- वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य हैं ।
- छपाई एवं लिखाई दोनों समान हैं ।
- ह्रस्व एवं दीर्घ में स्वर बँटे है ।
- निश्चित मात्राएँ हैं ।
- उच्चारण एवं प्रयोग में समानता है ।
- प्रत्येक के ढिए अलग लिपि चिह्न है ।

ध्वनि

'ध्वानि' का अर्थ है-वर्ण या भाषा की लघुतम इकाई । इसका खंड या टुकडा नहीं हो सकता ।

अर्थात 'वर्ण वह मूल ध्वनि है, जिसका खंड नहीं होता ।''

वर्णों या ध्वनियों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं । हिन्दी वर्णमाला में कुल 46 वर्ण हैं-

1. स्वर वर्ण (11)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ ।

स्वर वर्णों का उच्चरण बिना रुके लगातार होता है । ऊपर के किसी वर्ण का उच्चारण लगातार किया जा सकता है सिर्फ 'ऋ' वर्ण को छोडकर; क्योंकि ऋ का लगातार उच्चारण करने पर 'इ' स्वर आ जाता है ।

उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है-

(a) मूल या ह्रस्व स्वर- अ, इ, उ और ऋ

(b) दीर्घ स्वर-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और औ

ए : अ/आ + इ/ई (गुण होने के कारण)
ओ : अ/आ + उ/ऊ (गुण होने के कारण)
ऐ : अ/आ + ए (वृद्धि होने के कारण)
औ : अ/आ + ओ (वृद्धि होने के कारण)

जाति के अनुसार स्वर वर्णों को दो भागों में रखा गया है-

(a) सजातीय/सवर्ण स्वर : इसमें सिर्फ मात्रा का अंतर होता है । ये ह्रस्व और दीर्घ के
जोडेवाले होते है । जैसे-

अ-आ इ-ई उ-ऊ

(b) विजातीय/असवर्ण स्वर : ये दो भिन्न उच्चारण स्थानवाले होते है । जैसे-

अ-इ उ-ओ आदि ।

स्वरों के प्रतिनिधि रूप, जिनसे व्यंजन वर्णों का उच्चारण हो पाता है 'मात्रा' कहते है ।

2. व्यंजन वर्ण (33)

व्यंजन वर्णों का उच्चारण रुक-रूक कर होता है । ये वर्ण आधी मात्रावाले होते है, इसलिए बिना स्वर के इनका उच्चारण असंभव है ।

व्यंजन वर्णो को तीन भागों में बाँटा गया है-

(क) स्पर्श व्यंजन : ये वर्ण विभिन्न वागिन्द्रियों (कंठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ आदि) से स्पर्श क कारण उच्चरित होते है । इसके अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते है-

कवर्ग :	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
चवर्ग :	च्	छ्	ज्	झ्	ञ
टवर्ग :	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण् (ड, ढ)
तवर्ग :	त्	थ्	द्	ध्	न्
पवर्ग :	प्	फ्	ब्	भ्	म्

(ख) अन्तःस्थ व्यंजन : ये वर्ण स्पर्श एवं ऊष्म के बीच आते है । इसके अंतर्गत य्, र्, ल् और व्- ये चार ध्वनियाँ आती है ।

(ग) ऊष्म व्यंजन : ये ऐसे वर्ण है, जिनके उच्चारण में विशेष घर्षण के कारण मुख से गर्म हवा निकलती है । इसके अंतर्गत श्, ष्, स् और ह् आते है ।

(iii) अयोगवाह वर्ण : 'अनुस्वार' और 'विसर्ग' अयोगवाह वर्ण है । ये स्वर एवं व्यंजन दोनों द्वारा ढोए जाते है । जैसे-

अं-अः (स्वर द्वारा) कं-कः (व्यंजन द्वारा)

उच्चारण में वायु-प्रक्षेप की दृष्टि से या काकल के आधार पर वर्णों के दो प्रकार हैं-

(क) अल्पप्राण : ऐसे वर्ण, जिनके उच्चारण में वायु की सामान्य मात्रा रहती है और हकार-जैसी ध्वनि बहुत ही कम होती है । इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्ण, वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण, अनुस्वार और अन्तःस्थ व्यंजन आते हैं । इसकी कुल संख्या 11 + 15 + 1 + 4 =31 है ।

(ख) महाप्राण : महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण में वायु की पर्याप्त मात्रा होती है, जिसके कारण हकार-जैसी ध्वनि स्पष्ट दिखती है । इसके अंतर्गत सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन, विसर्ग और ऊष्म व्यंजन आते हैं । इसकी कुल संख्या 10 + 1 + 4 = 15 है ।

स्वर-तंत्री के आधार पर वर्णों को दो अन्य भागों में भी बाँटा गया है ।

(क) घोष या सघोष वर्ण : घोष ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों आपस में मिल जाती हैं और वायु धक्का देते बाहर निकलती है । फलतः झंकृति पैदा होती है । इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण, अन्तःस्थ और ह आते हैं ।

(ख) अघोष वर्णों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियाँ परस्पर नहीं मिलती । फलतः वायु, आसानी से निकल जाती हे । इस वर्ग में वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण और तीनों श (श, ष, स) आते हैं ।

आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर स्वरों को चार और व्यंजनों को आठ वर्गों में रखा गया है-

स्वर	प्रकार	वर्ण
	संवृत स्वर	इ, ई, उ और ऊ
	अर्द्धसंवृत स्वर	ए, ऐ, ओ और औ
	अर्द्धविवृत स्वर	ऍ
	विवृतस्वर	आ
व्यंजन	प्रकार	वर्ण
	स्पर्श व्यंजन	क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प. फ, व, भ
	स्पर्श संघर्षी व्यंजन	न, छ, ज और झ
	संघर्षी व्यंजन	म, श, ह, ख, ग, ज, फ और व
	अनुनासिक	छ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार
	पार्श्विक	ल
	लुंठित/प्रकंपी	र
	उत्क्षिप्त	ड, ढ
	अर्द्ध स्वर	य और व

उच्चारण-स्थान की दृष्टि से वर्णों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है-

	प्रकार	वर्ण
1.	कंठ्य वर्ण	अ, आ, कवर्ग, विसर्ग और ह
2.	तालव्य वर्ण	इ, ई, चवर्ग, य और श
3,	मूर्द्धन्य वर्ण	ऋ, टवर्ग, र और ष
4.	दंत्य वर्ण	तवर्ग और स
5.	वर्त्स्य वर्ण	ल
6.	ओष्ठ्य वर्ण	उ, ऊ और पवर्ग
7.	कण्ठ-तालव्य वर्ण	ए और ऐ
8.	कण्ठोष्ठ्य वर्ण	ओ और औ
9.	दन्तोष्ठ्य वर्ण	व
10	नासिक्य वर्ण	पंचमाक्षर और अनुस्वार
11.	अलिजिह्व वर्ण	क, ख, ग, ज और फ

उच्चारण करने की स्थिति में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि क्रमशः आती रहती है और ध्वनियों के मध्य आवश्कतानुसार अल्पकालिक विराम की अवस्था आती है । इसी को 'संगम' कहा जाता है । इस एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि पर जाने के दो तरीके होते हैं-

(क) कभी वक्ता सीधे पहली से दूसरी ध्वनि पर चला जाता है । जैसे -

तुम् (तुम्हारा के उच्चारण में)

(ख) कभी वक्ता थोडा ज्यादा समय लता है । जैसे-

तुम हारे (तुम्हारे के उच्चारण में)

संगम के लिए किसी विराम चिन्ह की आवश्यकता नहीं पडती है । इसके प्रयोग से शब्दों या वाक्यों के अर्थों में भिन्नता आ सकती है । जैसे-

नफीस - सुन्दर (एक साथ उच्चारित होने पर)

न फीस-निःशुल्क (अलग-अलग उच्चारित होने पर)

सोना– स्वर्ण सो ना– मत सो

वाक्यों में प्रयोग देखें–

वह बैलगाडी खींचता है । (कोई व्यक्ति)

वह बैल गाडी खींचता है । (बैल के बारे में)

उच्चारण के समय जब स्वरों पर अधिक बल पडता है तब उसे बलाघात या स्वराघात कहा जाता है ।

यह तीन तरह का होता है–

1. वर्ण–बलाघात : इससे अर्थ में अन्तर आ जाता है। जैसे–पिट–पीट, लुट–लूट

इन उदाहरणों में स्पष्ट देखा जा रहा है कि 'पि' और 'लु' पर बलाघात के कारण अर्थों अंतर आ गया है ।

2. शब्द–बलाघात : इससे वाक्यों के अर्थों में स्पष्टता आती है ।

3. वाक्य–बलाघात: इसमें वाक्य के भिन्न–भिन्न पदों पर बलाघात के कारण भावों में अंतर देखा जाता है ।

ध्वनियों की उस छोटी से छोटी इकाई को 'अक्षर' कह जाता है, जिनका उच्चारण एक झटके में होता है । जैसे–

आ– एक ध्वनिवाला अक्षर

खा– दो ध्वनियों वाला अक्षर

बैठ– तीन ध्वनियों वाला अक्षर

अक्षर दो प्रकार के होते हैं–

1. बद्धाक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि हलंतयुक्त हो । जैसे– श्रीमान्, जगत्, परिषद् आदि ।

2. मुक्ताक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि स्वर हो । जैसे– खा, ला, पी, जा, जगत आदि ।

जब कोई व्यंजन वर्ण स्वयं से ही संयोग करें, तो वह 'युग्मक ध्वनि' और जब किसी अन्य व्यंजन वर्ण से संयोग करे तो वह 'वयंजन गुच्छ कहलाता है ।

शॉर्ट ट्रिक

वर्णों के उच्चारण स्थान के लिए इसे याद कर लें

'अकह विसर्ग' कण्ठराम । 'इचयश' भी हैं तालु राम ॥
'ऋटष' से जानो मूर्द्धा जी । 'लृतस' पुकारो दन्त जी ॥
'उप' आते हैं ओष्ठ में । केवल 'व' दन्तोष्ठ में ॥
'ए-ऐ' कहे कण्ठ-तालु । 'ओ-औ' कहे कण्ठोष्ठ में ॥
नासिका से पंचमाक्षर । जिह्वा रखो प्रकोष्ठ में ॥

तत्सम - तद्भव

शब्दों को अलग-अलग रूपों में रखा जा रहा है–

1. विकास या उद्गम की दृष्टि से शब्द-भेद

इस दृष्टि से शब्दों को चार वर्गो में रखा गया है–

(क) तत्सम शब्द : वैसे शब्द, जो संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित है । अंतर केवल इतना है कि संस्कृत भाषा में वे अपने विभक्ति-चिह्नों या प्रत्ययों से युक्त होते है और हिंदी में वे उनसे रहित । जैसे–

संस्कृत में कर्पूर : पर्यङ्कः फलम् ज्येष्ठ :
हिंदी में कर्पूर पर्यंक फल ज्येष्ठ

(ख) तद्भव शब्द : (उससे भव या उत्पन्न) वैसे शब्द, जो तत्सम से विकास करके बने है और कई रूपों में वे उनके (तत्सम के) समान नजर आते है । जैसे–

कर्पूर > कपूर
पर्यङ्क > पलंग
अग्नि > आग आदि ।

नोट : नीचे तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है । इन्हें देखे और समझने की कोशिश करें कि इनमें समानता-असमानता क्या है ?

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	इक्षु	ईख
कर्पूर	कपूर	गोधूम	गेहूँ
घोटक	घोडा	आम्र	आम
उलूक	उल्लूक	काष्ठ	काठ
ग्राम	गाँव	घृणा	घिन
अग्नि	आग	उष्ट्र	ऊँट
कोकिल	कोयल	गर्दभ	गदहा
चर्मकार	चमार	अंध	अंधा
कर्ण	कान	क्षेत्र	खेत
गंभीर	गहरा	चन्द्र	चाँद
ज्येष्ठ	जेठ	धान्य	धान
पत्र	पत्ता	पौष	पूस
भल्लूक	भालू	बट	श्वशुर

श्रेष्ठी	सेठ	सुभाग	सुहाग
सूची	सूई	हास्य	हँसी
कर्म	काम	कूप	कुँआ
स्नेह	नेह	कातर	कायर
लोक	लोग	शिक्षा	सीख
कुठार	कुल्हाडा	पक्व	पक्का
शाक	साग	इष्टिका	ईंट
गणना	गिनती	काक	काग
श्वश्रू	सास	भिति	भीत
विष्ठा	बीठ	शर्करा	शक्कर
कज्जल	काजल	अद्य	आज
दुर्बल	दुबला	उन्मना	अनमना
चित्रक	चीता	कुंभकार	कुम्हार
भिक्षा	भीख	कोटि	करोड
गात्र	गात	होंठ	ओष्ठ
अगम्य	अगम	मालिनी	मलिन
ताम्र	ताँबा	नव्य	नया
प्रस्तर	पत्थर	पौत्र	पोता
मृत्यु	मौत	शया	सेज
श्रृंगाल	सियार	स्तन	थन
स्वामी	साईं	मस्तक	माथा
चंचु	चोंच	हरिद्रा	हल्दी
प्रिय	पिया	अपूप	पूआ
कारवेल	करेला	श्रृंखला	सौंकल
मृतिका	मिट्टी	चतुष्पादिका	चौकी
पर्यंक	पलंग	अर्द्धतृतीय	ढाई
कूट	कूडा	शुष्क	सूखा

खर्पर	खपरा	क्षीर	खीर
चणक	चना	घट	घडा
पक्ष	पंख	काया	काय
अंगुष्ट	अँगूठा	सप्त	सात
अक्षत	अच्छत	भाग्नेय	भांजा
भ्रातृ	भाई	यजमान	जजमान
कुष्ठ	कोढ	धैर्य	धीरज
धूम्र	धुआँ	प्रतिच्छाया	परछाई
श्रावण	सावन	तैल	तेल
निद्रा	नींद	पीत	पीला
बधिर	बहरा	मित्र	मीत
शत	सौ	शिर	सिर
स्वर्णकार	सुनार	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	अम्बा	अम्मा
कार्य	काज	जिह्वा	जीभ
आश्रय	आसरा	चूर्ण	चूना
सायम्	साँझ	त्वरित	तुरंत
चटका	चिडिया	सत्य	सच
सपत्नी	सौत	कपाट	किवाड
अष्ट	आठ	लक्ष	लाख
श्यामल	साँवला	लाक्षा	लाख
धरित्री	धरती	अक्षर	आखर
वायु	बयार	उच्च	ऊँचा
अवतार	औतार	कुक्कुर	कुकुर
याचक	जाचक	दधि	दही
उपवास	उपास	ग्राहक	ग्राहक
निर्वाह	निवाह	अट्टालिका	अटारी

आदित्यवार	एतवार	कुक्षि	कोख
दंत	दाँत	पद	पैर
पृष्ठ	पीठ	वानर	बन्दर
मुख	मुँह	श्वास	साँस
दश	दस	स्वर्ण	सोना
गौरी	गोरी	हस्ती	हाथी
तिक्त	तीता	चतुर्दश	चौदह
मयूर	मोर	केतक	केवडा
सर्षप	सरसों	स्वप्न	सपना
हास	हँसी	उद्धर्तन	उबटन
वचन	बैन	परशु	फरसा
सर्प	साँप	शलाका	सलाई
रात्रि	रात	वत्स	बच्चा
क्षुर	छूरा	दुग्ध	दूध
पूर्णिमा	पूनम	सर्व	सब
मौक्तिक	मोती	आशिष	आसीस
चक्रवाक	चकवा	श्वसुरालय	ससुराल
घृत	घी	कंकण	कंगन
गिद्ध	गीध	भक्त	भगत
कांचन	कंचन	गर्भिणी	गाभिन
यशोदा	जसोदा	चरित्र	चरित
अभीर	अहीर	फाल्गुन	फागुन
श्याली	साली	योद्धा	जोधा
पक्षी	पंछी	अंजलि	अँजुरी
दंतधावन	दातौन	जव	जौ
छिद्र	छेद	श्रृंगार	सिंगार
यश	जस	जमाता	जमाई

पर्यायवाची

पर्यायवाची – पर्याय का अर्थ है – समान और
पर्यायवाची शब्द से आशय है – समान अर्थवाला शब्द

अतिथि– मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहुना।

अमृत– सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक ।

अग्नि– आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, रोहिताश्व, वायुसखा, विभावसु, हुताशन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, कृशानु, वह्नि, शिखी।

अनुपम– अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अद्भुत, अनन्य।

असुर–यातुधान, निशिचर, रजनीचर, दनुज, दैत्य, तमचर, राक्षस, निशाचर, दानव, रात्रिचर।

अलंकार– आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना, जेवर।

अहंकार– दंभ, गर्व, अभिमान, दर्प, मद, घमंड, माना।

अतिथि– मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहुना।

अश्व– हय, तुरंग, घोडा, घोटक, हरि, तुरग, वाजि, सैन्धव।

अंधकार– तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा, तमस, अंधियारा।

अंग– अंश, अवयव, हिस्सा, भाग।

अभिमान– अस्मिता, अहं, अहंकार, अहंभाव,

अरण्य– जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।

अनी– कटक, दल, सेना, फौज, चमू, अनीकिनी।

अनादर– अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, अवमानना, परिभव।

अंकुश– नियंत्रण, पाबंदी, रोक, दबाव।

अंजाम– नतीजा, परिणाम, फल।

अंत– समाप्ति, अवसान, इति, इतिश्री, समापन।

अंतर– भिन्नता, असमानता, भेद, फर्क।

अंतरिक्ष– खगोल, नभमंडल, गगनमंडल, आकाशमंडल।

अंतर्धान– गायब, लुप्त, ओझल, अदृश्य।

अंदर– भीतर, आंतरिक, अंदरूनी, अभ्यंतर।

अंदाज– अंदाजा, अटकल, कयास, अनुमान।

अंधा– सूरदास, आँधरा, नेत्रहीन, दृष्टिहीन।

अंबर– आकाश, आसमान, गगन, फलक, नभ।

अंबु– जल, पानी, नीर, क्षीर, सलिल ।

अंबुज– कमल, पंकज, नीरज, वारिज, जलज, सरोज, पद्म।

अंबुद– मेघ, बादल, घन, घनश्याम, अंबुधर, घटा।

अंबुनिधि– समुंदर, सागर, सिंधु, जलधि, उदधि, जलेश।

अंशु– रश्मि, किरन, किरण, मयूख, मरीचि।

अंशुमान– सूरज, सूर्य, रवि, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, भास्कर।

अकिंचन– गरीब, निर्धन, दीनहीन, दरिद्र।

अक्ल– प्रज्ञा, मेधा, मति, बुद्धि, विवेक।

अखिलेश्वर– ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, खुदा।

अगम– दुष्कर, कठिन, दुःसाध्य, अगम्य।

अच्छा– बढ़िया, बेहतर, भला, चोखा, उत्तम।

अजनबी– अनजान, अपरिचित, नावाकिफ।

अजीब– अद्भुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण।

अटल– अविचल, अडिग, स्थिर, अचला।

अड़ंगा– बाधा, रुकावट, विघ्न, व्यवधान।

अतीत– भूतकाल, विगत, गत, भूत।

अत्याचारी– जालिम, आततायी, नृशंस, बर्बर।

अदालत– कचहरी, न्यायालय, दंडालय।

अधीन– मातहत, आश्रित, पराश्रित, परवश, परतंत्र।

अधीर– आतुर, धैर्यहीन, व्यग्र, बेकरार, उतावला।

अध्ययन– पठन-पाठन, पढ़ना, पढ़ाई, पठन।

अनपढ़– निरक्षर, अशिक्षित, अपढ़।

अनमोल– अमूल्य, बहुमूल्य, बेशकीमती।

अनाज– अन्न, गल्ला, नाज, खाद्यान्न।

अनाड़ी– अकुशल, अनभिज्ञ, अपटु।

अनाथ– दीन, लावारिस, बेसहारा, अनाश्रित।

अनिवार्य– अत्यावश्यक, अपरिहार्य, अवश्यंभावी, परमावश्यक।

अनुज– छोटा भाई, अनुभ्राता, अवरज, कनिष्ठ।

अनुभवी– तजुर्बेकार, जानकार, अनुभवप्राप्त।

अनुमति– इजाजत, सहमति, स्वीकृति, अनुमोदन।

अनुरोध– विनय, विनती, आग्रह, प्रार्थना।

अनूठा– अद्भुत, अनोखा, विलक्षण, अपूर्व।

अपराधी– गुनहगार, कसूरवार, मुलजिम।

अपवित्र– अशुद्ध, नापाक, अस्वच्छ, दूषित।

अफवाह– गप्प, किंवदंती, जनश्रुति, जनप्रवाद।

अभद्र– असभ्य, अविनीत, अकुलीन, अशिष्ट।

अभिनंदन– स्वागत, सत्कार, आवभगत, अभिवादन।

अमन– शांति, सुकून, सुख-चैन, अमन-चैन।

अमीर– धनी, मालदार, रईस, दौलतमंद, धनवान।

अर्चना– आराधना, पूजा, पूजन, अर्चन।

अलि– भौंरा, मधुकर, भ्रमर, भृंग, मिलिंद, मधुप, अलिंद।

असभ्य– गँवार, असंस्कृत, उजड्ड।

अहि– साँप, नाग, फणी, फणधर, सर्प।

आँख– लोचन, अक्षि, नैन, अम्बक, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि, अक्षि।

आकाश– नभ, गगन, द्यौ, तारापथ, पुष्कर, अभ्र, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान, अंतरिक्ष, शून्य, अर्श।

आनंद– हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, प्रमोद, उल्लास।

आश्रम– कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा ।

आम– रसाल, आम्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल, सहकार

आंसू– नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।

आत्मा– जीव, देव, चेतनतत्त्व, अंतःकरण।

आँगन– अँगना, अजिर।

आँधी– तूफान, बवंडर, झंझावत, अंधड।

आईना– दर्पण, आरसी, शीशा।

आकाश– आसमान, नभ, गगन, व्योम, फलक।

आक्रोश– क्रोध, रोष, कोप, रिष, खीझ।

आग– पावक, अनल, अग्नि, बाडव, वह्नि।

आचरण– चाल–चलन, बर्ताव, व्यवहार, चरित्र।

आचार्य– शिक्षक, अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु।

आजादी– स्वाधीनता, स्वतंत्रता, मुक्ति।

आजीविका– व्यवसाय, रोजी–रोटी, वृत्ति, धंधा।

आज्ञा– हुक्म, फरमान, आदेश।

आदत– स्वभाव, प्रकृति, प्रवृत्ति।

आनन– चेहरा, मुखडा, मुँह, मुखमंडल, मुख।

आबंटन– विभाजन, वितरण, बाँट, वंटना।

आबरू– सम्मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

आयु– उम्र,वय, जीवनकाल।

आयुष्मान– दीर्घायु, दीर्घजीवी, चिरंजीवी, चिरायु।

आरंभ– श्रीगणेश, शुभारंभ, प्रारंभ, शुरुआत, समारंभ।

आवेदन– प्रार्थना, याचना, निवेदन।

आशीर्वाद– शुभकामना, आशीष, आशिष, दुआ।

इन्द्र– सुरेश, क्रमपति, वज्रधर, वज्री, शचीश, वासव, वृषा, सुरेन्द्र, देवेन्द्र, सुरपति, शक्र, पुरंदर, देवराज, महेन्द्र, मघवा, शचीपति, मेघवाहन, पुरुहूत, यादव।

इन्द्राणि– इन्द्रवधू, मघवानी, शची, शतावरी, पोलोमी।

इच्छा– अभिलाषा, अभिप्राय, चाह, कामना, ईप्सा, स्पृहा, ईहा, वांछा, लिप्सा, लालसा, मनोरथ, आकांक्षा, अभीष्ट।

इंतकाल– देहांत, निधन, मृत्यु, अंतकाल।

इंदु– चाँद, चंद्रमा, चंदा, शशि, राकेश, मयंक, महताब।

ईश्वर– परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।

ईख– गन्ना, ऊख, इक्षु।

ईमानदारी– सच्चा, सत्यपरायण, नेकनीयत, सत्यनिष्ठा।

उपवन– बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन।

उक्ति– कथन, वचन, सूक्ति।

उग्र– प्रचण्ड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।

उचित– ठीक, मुनासिब, वाजिब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।

उच्छृंखल– उद्दंड, अक्खड, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।

उजला– उज्ज्वल, श्वेत, सफेद, धवल।

उजाड– जंगल, बियावान, वन।

उजाला– प्रकाश, रोशनी, चाँदनी।

उत्कृष्ट– उत्तम, उन्नत, श्रेष्ठ, अच्छा, बढिया, उम्दा।

उत्कोच– घूस, रिश्वत।

उत्पति– उद्गम, पैदाइश, जन्म, उद्भव, सृष्टि, आविर्भाव, उदय।

उपाय– युक्ति, साधन, तरकीब, तदबीर, यत्न, प्रयत्न।

उदार– फराखदिल, क्षीरनिधि, दरियादिल, दानशील, दानी।

उदाहरण– मिसाल, नजीर, दृष्टांत।

उद्देश्य– लक्ष्य, प्रयोजन, मकसद।

उद्यान– बगीचा, बाग, वाटिका, उपवन।

उन्नति– प्रगति, तरक्की, विकास, उत्कर्ष।

उपकार– भेंट, नजराना, तोहफा।

उपहास– परिहास, मजाक, खिल्ली।

उपानह- खडाऊँ, पनही, पादुका, पदत्राण।

उमा- गौरी, गौरा, गिरिजा, पार्वती, शिवा, शैलजा, अपर्णा।

उम्मीद- आशा, आस, भरोसा।

उर- हृदय, दिल, वक्षस्थल।

उरग- सर्प, साँप, नाग, फणी, फणधर, मणिधर, भुजंग।

उलूक- उल्लू, चुगद, खूसट, कौशिक, घुग्घू।

उषा- सुबह, भोर, भिनसार, अलस्सुबह, ब्रह्ममुहूर्त।

ऊँचा- तुंग, उच्च, बुलंद, गगनस्पर्शी।

ऊँट- करभ, उष्ट्र, लंबोष्ठ, साँडिया।

ऊधम- उपद्रव, उत्पात, धूम, हुल्लड, हुडदंग, धमाचौकडी।

ऋक्ष- भालू, रीछ, भीलूक, भल्लाट, भल्लूक।

ऋक्षेश- चंद्रमा, चंदा, चाँद, शशि, राकेश, कलाधर, निशानाथ।

ऋण- कर्ज, कर्जा, उधार, उधारी।

ऋतुराज- बहार, मधुमास, वसंत, ऋतुपति, मधुऋतु।

ऋषभ- वृष, वृषभ, बैल, पुंगव, बलीवर्द, गोनाथ।

ऋषि- साधु, महात्मा, मुनि, योगी, तपस्वी।

ऐंठ- कड, दंभ, हेकडी, ठसका।

ऐब- खामी, खराबी, कमी, अवगुण।

ओज- तेज, शक्ति, बल, चमक, कांति, दीप्ति, वीर्य।

ओंठ- ओष्ठ, अधर, लब, होठ।

ओला- हिमगुलिका, उपल, करका, हिमोपल।

ओस- नीहार, तुहिन, शबनम।

औचक- अचानक, यकायक, सहसा।

औरत- स्त्री, जोरू, घरनी, महिला, मानवी, तिरिया, नारी, वनिता, घरवाली।

औचित्य- उपयुक्तता, तर्कसंगति, तर्कसंगतता।

औलाद- संतान, संतति, आसऔलाद, बाल-बच्चे।

औषधालय- चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल।

कमल- नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज, सरसिज, राजीव, पद्म, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, शतदल, पुण्डरीक, इन्दीवर।

किरण- गभस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।

कामदेव- मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति, पुष्पधन्वा, मन्मथ।

कपडा- मयुख, वस्त्र, चीर, वसन, पट, अंशु, कर, अम्बर, परिधान।

कुबेर- किन्नरेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराजा।

कबूतर- कपोत, रक्तलोचन, पारावत, कलरव, हारिल।

कण्ठ- ग्रीवा, गर्दन, गला, शिरोधरा।

किनारा- तीर, कूल, कगार, तट।

कृष्ण- राधापति, घनश्याम, वासुदेव, माधव, मोहन, केशव, गोविन्द, मुरारी, नन्दनन्दन, राधारमण, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, मुरलीधर, द्वारिकाधीश, यदुनन्दन, कंसारि, रणछोड, बंशीधर, गिरधारी।

कान- कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण, श्रोत, श्रुतिपुट।

कोयल- कोकिला, पिक, काकपाली, बसंतदूत, सारिका, कुहुकिनी, वनप्रिया।

क्रोध- रोष, कोप, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश, कोह, प्रतिघात।

कार्तिकेय- कुमार, षडानन, शरभव, स्कन्द।

कुत्ता- श्वा, श्वान, कुक्कुर।

कल्पद्रुम- देवद्रुम, कल्पवृक्ष, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दन।

काक- कौआ, वायस, काग, करठ, पिशुन।

कंगाल- निर्धन, गरीब, रंक, धनहीन।

कंचन- स्वर्ण, सोना, कनक, कुंदन, हिरण्य।

कंजूस– कृपण, सूम, मक्खीचूस।

कंटक– काँटा, खार, शूल।

कंदरा– गुफा, खोह, विवर, गुहा।

कछुआ– कच्छप, कमठ, कूर्म।

कटक– फौज, सेना, पलटन, लश्कर, चतुरंगिणी।

कद्र– मान, सम्मान, इज्जत, प्रतिष्ठा।

कमजोर– निर्बल, बलहीन, दुर्बल, मरियल, शक्तिहीन।

कमला– लक्ष्मी, महालक्ष्मी, श्री, हरप्रिया।

कर्ज– उधार, ऋण, कर्जा, उधारी, कुसीद।

कष्ट– तकलीफ, पीडा, वेदना, दुःख।

कालकूट– जहर, विष, गरल, हलाहल।

काला– श्याम, कृष्ण, कलूटा, साँवला, स्याह।

किनारा– तट, तीर, कगार, कूल, साहिल।

किरीट– ताज, मुकुट, शिरोभूषण।

कीर– तोता, शुग्गा, शुआ, शुक।

केतन– ध्वज, झंडा, पताका, परचम।

केवट– मल्लाह, माँझी, खेवैया, नाविक।

केसरी– शेर, सिंह, नाहर, वनराज, मृगराज, मृगेंद्र।

क्रुद्ध– नाराज, कुपित, क्रोधित, क्रोधी।

क्रूर– बेरहम, बेदर्द, बेदर्दी, बर्बर।

क्षिप्र– तीव्र, तेज, द्रुत, शीघ्र, तुरंत।

क्षीण– कमजोर, कृश, दुर्बल, अशक्त।

खाना– भोज्य सामग्री, खाद्य वस्तु, आहार, भोजन।

खग– पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, शकुनि, पखेरू।

खटमल– मत्कुण, खटकीट, खटकीडा।

खर– गधा, गर्दभ, खोता, रासभ, वैशाखनंदन।

खरगोश– शशक, शशा, खरहा।

खलक– दुनिया, जगत, जग, विश्व, जहान।

खिल्ली– मखौल, ठिठोली, उपहास।

खुदगर्ज– स्वार्थी, मतलबी, स्वार्थपरायण।

खून– रक्त, लहू, शोणित, रुधिर।

गणेश– विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन, विघ्नराज, मोदकप्रिय, मोददाता, गणपति, गणनायक, शंकरसुवन, लम्बोदर, महाकाय, एकदन्त।

गंगा– देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विष्णुपगा, देवपगा, हरिवनंदा, सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरि, अमरतरंगिनी, विष्णुपदी, नदीश्वरी, त्रिपथगा।

गज– हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल ।

गाय– गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।

गृह– घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आयतन, आलय, आवास, निलय, मंदिर।

गर्मी– ताप, ग्रीष्म, ऊष्मा, गरमी, निदाघ।

गुरु– शिक्षक, आचार्य, उपाध्याय।

गरुड– खगेश, पत्रगारि, उरगारि, हरियान, वातनेय, खगपति, सुपर्ण, विषमुख।

गगन– आसमान, आकाश, नभ, व्योम, अंतरिक्ष।

गरदन– गला, कंठ, ग्रीवा, गलई।

गाँव– ग्राम, देहात, खेडा, पुरवा, टोला।

गेहूँ– कनक, गोधूम, गंदुम।

गोधूलि– साँझ, संध्या, शाम, सायंकाल।

ग्राह– मगरमच्छ, घडियाल, मगर, झषराज।

गदहा– खर, गर्दभ, धूसर, रासभ, बेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन।

घट– घडा, कलश, कुम्भ, निप।
घर– आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन, वास, वास–स्थान, शाला, सदन।

घन– मेघ, बादल, घटा, अंबुद, अंबुधर।

घमंड– दंभ, दर्प, गर्व, गरूर, गुमान, अभिमान, अहंकार।

घुड़सवार– अश्वारोही, तुरंगी, तुरंगारूढ़।

घास– तृण, दूर्वा, दूब, कुश, शाद्व।

चन्द्र– चाँद, सुधांशु, सुधाधर, राकेश, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगांक, कलानिधि, हिमांशु, इंदु, सुधाकर, विधु, शशि, चंद्रमा, तारापति।

चरण– पद, पग, पाँव, पैर, पाद।

चतुर– विज्ञ, निपुण, नागर, पटु, कुशल, दक्ष, प्रवीण, योग्य।

चोर– तस्कर, दस्यु, रजनीचर, मोषक, कुम्भिल, खनक, साहसिक।

चाँदनी– चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, चन्द्ररोचि, उजियारी, चन्द्रप्रभा, जुन्हाई।

चाँदी– रजत, सौध, रूपा, रूपक, रौप्य, चन्द्रहास।

चंडी– दुर्गा, अंबा, काली, कालिका, जगदंबिका, भगवती।

चतुरानन– विधाता, ब्रह्मा, सृष्टा, सृष्टिकर्ता।

चूहा– मूसा, मूषक, मुसटा, उंदुर।

चौकीदार– प्रहरी, पहरेदार, रखवाला।

चौमासा– वर्षाकाल, वर्षाऋतु, बरसात।

चोटी– मूर्धा, शीर्ष, सानु, शृंग।

छतरी– छत्र, छाता, छत्ता।

छवि– शोभा, सौंदर्य, कान्ति, प्रभा।

छानबीन– जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।

छैला– रंगीला, बाँका, शौकीन।

छँटनी– कटौती, छँटाई, काट–छाँट।

छटा– शोभा, छवि, सुंदरता, खूबसूरती।

छल– दगा, ठगी, फरेब, छलावा।
छाछ– मही, मठा, मठ्ठा, लस्सी, छाछी।

छाती– सीना, वक्ष, उर, वक्षस्थल।

छींटाकशी– ताना, व्यंग्य, फब्ती, कटाक्ष।

छुटकारा– मुक्ति, रिहाई, निजात।

जल– मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन, पय, पेय।

जगत– संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।

जीभ– रसना, रसज्ञा, जिह्वा, रसिका, वाणी, वाचा, जबान।

ज्योति– आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।

जननी– माँ, माता, मम्मी, अम्मा, वालिदा।

जन्नत– स्वर्ग, सुरधाम, बैकुंठ, सुरलोक, हरिधाम।

जन्मांध– सूरदास, अंधा, आँधरा, नेत्रहीन।

जरठ– वृद्ध, बुड्ढा, बूढ़ा।

जलाशय– तालाब, तलैया, ताल, पोखर, सरोवर।

जवान– तरुण, युवक, नौजवान, नौजवाँ, युवा।

जवानी– युवावस्था, यौवन, तारुण्य, तरुणाई।

जाँघ– उरु, जानु, जघन, जंघा, रान।

जाई– बेटी, कन्या, पुत्री, लड़की।

जीविका– रोजी–रोटी, रोजी, आजीविका, वृत्ति।

ज्ञानी– विद्वान, सुविज्ञ, आलिम, विवेकी, ज्ञानवान।

झरना– उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्त्रवण।

झण्डा– ध्वजा, पताका, केतु।

झाँसा– दगा, धोखा, फरेब, ठगी।

झींगुर– घुरघुरा, झिल्ली, जंजीरा, झिल्लिका।

झूठ– असत्य, मिथ्या, मृषा, अनृत।

टक्कर– मुठभेड़, लड़ाई, मुकाबला।

टीका– तिलक, चिह्न, दाग, धब्बा।

टंटा– झगड़ा, लफड़ा, पचड़ा, झंझट।

टहनी- डाल, डाली, वृंत, उपशाखा, प्रशाखा।

ठग- छली, छलिया, फरेबी, वंचक, धूर्त, धोखेबाज।

ठठोली- मजाक, परिहास, ठट्ठा, ठिठोली, दिल्लगी।

ठुड्डी- ठुड्डी, हनु, चिबुक, ठोडी।

ठेस- चोट, आघात, धक्का।

डंडा- सोंटा, छडी, लाठी।

डंका- नगाडा, भेरी, दुंदभि, धौंसा।

डंस- मच्छर, मस, डाँस, मच्छड।

डगर- राह, रास्ता, पथ, मार्ग, पंथ।

डर- खौफ, भय, दहशत, भीति।

डाकू- दस्यु, लुटेरा, डकैत, बटमार, राहजन।

ढब- ढंग, रीति, तरीका, ढर्रा।

ढील- शिथिलता, सुस्ती, अतत्परता।

ढँग- शऊर, सलीका, कायदा, तौरतरीका।

ढिंढोरा- मुनादी, ढँढोरा, डुगडुगी, डौंडी।

ढिग- समीप, निकट, पास, आसन्न।

ढोंग- पाखंड, प्रपंच, आडम्बर, ढोंगबाजी।

ढोल- ढोलकी, ढोलक, पटह, प्रणव।

तालाब- सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्माकर , पोखरा, जलवान, सरसी, तडाग।

तोता- सुग्गा, शुक, सुआ, कीर, रक्ततुण्ड, दाडिमप्रिय।

तलवार- असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।

तरकस- तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।

तकदीर- किस्मत, मुकद्दर, नसीब, भाग्य, प्रारब्ध।

तट- कगार, किनारा, कूल, तीर, साहिल।
तटिनी- नदी, सरिता, दरिया, सलिला, तरंगिणी।

तडाग- जलाशय, सरोवर, तालाब, पोखर।

तन- काया, देह, शरीर, बदन, तनु।

तपस्वी- तापस, मुनि, संन्यासी, तपसी, बैरागी।

तम- अँधेरा, अंधकार, तिमिर, अँधियारा।

तरनी- नौका, नाव, किश्ती, नैया।

तरुण- युवक, युवा, जवान, नौजवान।

तरुणाई- युवावस्था, यौवन, जवानी, जोबन।

तिरिया- स्त्री, औरत, महिला, ललना।

तीमारदारी- सेवाटहल, परिचर्या, सेवासुश्रूषा।

तीर- शर, बाण, विशिख, शिलीमुख, अनी, सायक।

थोडा- अल्प, न्यून, जरा, कम।

थल- स्थान, स्थल, भूमि, जगह।

थोथा- सारहीन, खोखला, खाली।

दूध- दुग्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गोरस, स्तन्य।

दास- नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, अनुचर, भृत्य, किंकर।

दुःख- पीडा, कष्ट, व्यथा, वेदना, संताप, संकट, क्लेश, यातना, यन्तणा, शोक, खेद, पीर,।

देवता- सुर, देव, अमर, वसु, आदित्य, निर्जर, त्रिदश, गीर्वाण, अदितिनंदन, अमर्त्य, अस्वप्न, आदितेय, दैवत, लेख, अजर, विबुध।

द्रव्य- धन, वित्त, सम्पदा, विभूति, दौलत, सम्पत्ति।

दैत्य- असुर, इंद्रारि, दनुज, दानव, दितिसुत, दैतेय, राक्षस।

दिन- दिवस, याम, दिवा, वार, प्रमान, वासर, अह्न।

दीन- गरीब, दरिद्र, रंक, अकिंचन, निर्धन, कंगाल।

दुष्ट- पापी, नीच, दुर्जन, अधम, खल, पामर।

दाँत- दशन, रदन, रद, द्विज, दन्त, मुखखुर।

दर्पण- शीशा, आरसी, आईना, मुकुर।
दुर्गा- चंडिका, भवानी, कुमारी, कल्याणी, सिंहवाहिनी, कामाक्षी, सुभद्रा, महागौरी, कालिका, शिवा, चण्डी, चामुण्डा।

दया– अनुकंपा, अनुग्रह, करुणा, कृपा, प्रसाद, संवेदना, सहानुभूति, सांत्वना।

दशरथ– अवधेश, कौशलपति, दशरथनंदन, रावण।

दारा– बीवी, पत्नी, अर्धांगिनी, वामांगिनी, गृहणी।

दिवंगत– स्वर्गीय, मृत, मरहूम, परलोकवासी।

दुनिया– जग, जगत, खलक, जहान, विश्व, संसार, भव।

दुष्कर– कठिन, दुसाध्य, दूभर, मुश्किल।

देश– राष्ट्र, राज्य, मुल्क।

देशज– देशजात, देशीय, देशी, मुल्की, वतनी।

देशाटन– यात्रा, विहार, पर्यटन, देशभ्रमण।

द्वैत– जोडा, युगल, द्वय, यमल, युग, युति।

द्वैपायन– वेदव्यास, व्यास, पाराशर, कृष्ण।

देह– काया, तन, शरीर, वपु, गात।

धन– दौलत, संपत्ति, सम्पदा, वित्त।

धरती– धरा, धरती, वसुधा, जमीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही, रत्नवती, रत्नगर्भा।

धंधा– आजीविका, उद्योग, कामधंधा, व्यवसाय।

धनंजय – अर्जुन, सव्यसाची, पार्थ, गुडाकेश, बृहन्नला।

धनु– धनुष, पिनाक, शरासन, कोदंड, कमान, धनुही।

धराधर– पर्वत, पहाड, शैल, मेरु, महीधर, भूधर।

धराधीश– सम्राट, शहंशाह, नृप, नरेश, महीप, महीपति।

धान– चावल, चाउर, तंदुल, शालि, व्रीहि।

धी– अक्ल, दिमाग, बुद्धि, मति, प्रज्ञा, मेधा, विवेक।

धीरज– सब्र, संतोष, तसल्ली, धैर्य, दिलासा।

ध्वनि– नाद, रव, स्वर, ताल, आवाज।

नदी– तनूजा, सरित, शैवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्नगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि, सारंग, जयमाला, तरंगिणी, दरिया, निर्झरिणी।

नौका– नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेडा, डोंगी, तरी, पतंग।

नाग– विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।

नंदिनी– बेटी, पुत्री, अंगजा, तनुजा, सुता, धी, दुहिता।

नक्षत्र– उडु, तारिका, नखत, जुन्हाई।

नगपति– हिमालय, पर्वतराज, पर्वतेश्वर, नगेश, नगेंद्र, शैलेन्द्र।

नश्वर– नाशवान, फानी, क्षयी, क्षर, भंगुर, मर्त्य।

नारी– स्त्री, वनिता, महिला, मानवी।

निवेदन– विनय, अनुनय, विनती, प्रार्थना, गुजारिश, इल्तजा।

नौकर– भृत्य, चाकर, किंकर, मुलाजिम, खादिम।

पति– भर्ता, वल्लभ, स्वामी, प्राणाधार, प्राणप्रिय, प्राणेश, आर्यपुत्र।

पत्नी– भार्या, दारा, बेगम, कलत्र, प्राणप्रिया, वधू, वामा, अर्धांगिनी, सहधर्मिणी, गृहणी, बहु, वनिता, जोरू, वामांगिनी।

पक्षी– खेचर, द्विज, पतंग, पंछी, खग, विहग, परिन्दा, शकुन्त, अण्डज, चिडिया, गगनचर, पखेरू, विहंग, नभचर।

पर्वत– पहाड, गिरि, अचल, भूमिधर, तुंग अद्रि, शैल, धरणीधर, धराधर, नग, भूधर, महीधर।

पण्डित– सुधी, विद्वान, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, प्राज्ञ, विचक्षण।

पुत्र– बेटा, लडका, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन।

पुत्री– बेटी, आत्मजा, तनूजा, दुहिता, नन्दिनी, लडकी, सुता, तनया।

पृथ्वी– धरा, धरती, भू, इला, उर्वी, धरित्री, धरणी, अवनि, मेदिनी, क्षिति, मही, वसुंधरा, वसुधा, जमीन, भूमि।

पुष्प– फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।

पानी– जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।

पार्वती– अपर्णा, अंबिका, आर्या, उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी, शिवा।

पत्थर– पाहन, पाषाण, प्रस्तर, उपल।

पिता– जनक, तात, पितृ, बाप।

परोपकार– परहित, भलाई, नेकी, परकाज, परमार्थ, परार्थ।

प्रतिदिन– रोजाना, हर दिन, हर रोज, रोज, रोज-रोज।

प्रहरी– द्वारपाल, पहरेदार, प्रतिहारी, दरबान, चौकीदार।

प्रेक्षागृह– नाट्यगृह, छविगृह, नाट्यशाला, रंगशाला, रंगभूमि, रंगस्थली।

पवन– वायु, हवा, समीर, वात, मारुत, अनिल, पवमान, समीरण, स्पर्शना।

फूल– पुष्प, सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून।

बाण– सर, तीर, सायक, विशिख, आशुग, इषु, शिलीमुख, नाराच।

बिजली– घनप्रिया, इन्द्रध्वज, चंचला, सौदामनी, चपला, बीजुरी, क्षणप्रभा, घनवल्ली, शया, ऐरावती, दामिनी, ताडित, विद्युत।

ब्रह्मा– विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, आत्मभू, लोकेश, पितामह, चतुरानन, विरंचि, अज, कर्तार, कमलासन, नाभिजन्म, हिरण्यगर्भ।

बहुत– अनेक, अतीव, अति, बहुल, भूरि, बहु, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार, अमित, अत्यन्त, असंख्य।

बन्दर– वानर, कपि, कपीश, मर्कट, कीश, शाखामृग, हरि।

बगीचा– बाग, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी, बगिया।

बंदीगृह– कारागृह, कारागार, कारावास, कैदखाना, जेल।

बजरंगबली– हनुमान, वायुपुत्र, केसरीनंदन, पवनपुत्र, बजरंगी, महावीर।

बाँसुरी– वेणु, बंशी, मुरली, बंसुरी।

बलदेव– बलराम, बलभद्र, हलायुध, राम, मूसली, रोहिणेय, संकर्षण।

भौंरा– अलि, मधुव्रत, शिलीमुख, मधुप, मधुकर, द्विरेप, षट्पद, भृंग, भ्रमर।

भोजन– खाना, भोज्य सामग्री, खाद्य वस्तु, आहार।

भाई– तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।

भंगुर– नाशवान, नश्वर, अनित्य, क्षर, मर्त्य, विनश्वर।

भंडारी– रसोइया, खानसामा, महाराज, रसोईदार।

भंवरा– भौंरा, भ्रमर, मधुकर, मधुप, मिलिंद, अलि, अलिंद, भृंग।

भगिनी– बहन, बहना, स्वसा, अग्रजा।

भद्र– शिष्ट, शालीन, कुलीन, सभ्य, सलीकेदार, बासलीका।

भरोसा– यकीन, विश्वास, ऐतबार, अकीदा, आश्वास।

भव– संसार, दुनिया, जग, जहाँ, विश्व, खलक, खल्क।

भविष्य– भावी, अनागत, भविष्यतकाल, मुस्तकबिल, भविष्यद।

भारती– शारदा, सरस्वती, वाग्देवी, वीणावादिनी, विद्या, वागेश्वरी, वागीशा।

भीष्म– गंगापुत्र, शांतनुसुत, भीष्मपितामह, देवव्रत।

भुजा– भुज, बाहु, बाँह, बाजू

मछली– मीन, मत्स्य, झख, झष, जलजीवन, शफरी, मकर।

महादेव– शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश, गिरीश, हर, त्रिलोचन।

मुनि– यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

मित्र– सखा, सहचर, स्नेही, स्वजन, सुहृदय, साथी, दोस्त।

मोर– केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिया।